नब्बे के दशक से बंद खाद कारखाने पर तब की राजनीति के पहरुओं ने सिर्फ आश्वासनों की घुट्टी दी तो मोदी-योगी ने वादा निभाया

सकारात्मक राजनीति का फल है गोरखपुर खाद कारखाना

के. विक्रम राव
(वरिष्ठ पत्रकार-राजनीतिक विश्लेषक)

गोरखपुर का खाद कारखाना 1990 में एक हादसे के बाद बंद हुआ तो लोगों को उम्मीद थी कि तब पूर्वी यूपी के सार्वजनिक क्षेत्र के इस इकलौते भारी उद्योग को तत्कालीन सरकारें किसानों, निवेशकों के हित में जल्द दोबारा शुरू करेंगी। पर, नब्बे के दशक से क्षेत्र-जाति के खांचे में बंटे राजनीति के पहरुओं ने सिर्फ आश्वासनों की घुट्टी पिलाई।

कारखाना क्या बंद हुआ, गोरखपुर की औद्योगिक पहचान ही संकट में आ गई। तब महंत अवेद्यनाथ गोरखपुर सांसद थे और 1998 में सियासत से संन्यास लेने तक सरकार से सवाल करते रहे कि कारखाना कब चलाया जाएगा? पूर्व प्रधानमंत्री स्मृति शेष अटल बिहारी वाजपेयी कहा करते थे, अंधेरा छटेगा। खाद कारखाने को लेकर महंत अवेद्यनाथ और उनके उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ के मन में यही बात थी।

1998 में योगी गोरखपुर से पहली बार सांसद बने। 1998 में तक देश के सबसे युवा सांसद लोकसभा में खेती, किसानों के हित में खाद कारखाना दोबारा चलाने की मांग उठाते सरकार कन्नी काटने लगती। योगी ने भी ठान रखा था कि कारखाने को चलवाना ही

है। संसद के हर सत्र में उनकी यही मांग रही। 1998 में भाजपा सरकार थी और वाजपेयी प्रधानमंत्री। लगा कि चिमनियों से जल्द धुआं निकलेगा। कृभको तैयार हो गई, सर्वे-भूमिपूजन तक हो गया। पर यूनियन ने कर्मचारियों के समायोजन का पेच फंसा दिया तो कृभको बैकफुट पर चली गई। योगी के संघर्षों को ठौर मिलना तब शुरू होता है जब 2014 में नरेंद्र मोदी को भाजपा ने पीएम प्रत्याशी घोषित किया।

खाद कारखाना परिसर में मंजूरी नहीं मिली तो मानबेला मैदान में रैली हुई, जिसमें योगी ने मांग रखी कि सरकार बनने पर कारखाना चलाया जाए या नई फैक्ट्री शुरू हो। यह वही मैदान था, जहां से 56 इंच का सीना वाली बात बहुप्रचारित हुई तो मोदी ने फैक्ट्री चलाने का वादा किया। पीएम बनते ही मोदी ने योगी, जनता से वादा निभाया। ढाई दशक से बंद कारखाने की मशीनें कंडम थीं। तय हुआ कि नया प्लांट लगेगा तो उपक्रम हिंदुस्तान उर्वरक-रसायन लिमिटेड बना।

22 जुलाई 2016 को पीएम ने फैक्ट्री का शिलान्यास किया। कभी विपक्ष के लिए योगी पर तंज की राजनीतिक खेती में खाद बना रहा कारखाना अब किसानों की हालत सुधारेगा। फसलें लहलहाएंगी तो आय-रोजगार बढ़ेगा। सकारात्मक राजनीति के कारखाने से खुशहाली की खाद तैयार है, जो किसान हितैषी, तेजी से फैसले लेने वाली राजनीति का सुखद प्रतिफल है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)